Vol 5 Issue 11 Dec 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | Dec - 2015

Indian Streams Research Journal

लोक चेतना के संवाहक–संत रविदास

मोनिका घुल्ला
सहायक प्रो.,डी. ए. वी कॉलेज, अबोहर.

सारांश–

सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक,राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्रों की चेतना समन्वित रूप ही लोक चेतना कहलाता हैं।इस लोक चेतना को समाज में प्रचारित और प्रसारित करके समाज का अभिन्न अंग बनाने का कार्य एक सच्चा कवि ही कर सकता है।संत रैदास हिंदी साहित्य की ऐसी विभूति है जिन्होने अपनी तुलिका के माध्यम से लोक चेतना को प्राणवान बनाया है। आचरण और कर्म की गरिमा से केवल उन्होने लोक चेतना का उद्घोष ही नहीं किया,अपितु अपने महिमा मंडित जीवन से अनुप्रमाणित करके मध्ययुगीन चेतना को एक ऐसी नूतन दिशा दी,जिससे न केवल वह युग आलोकित हुआ,अपितु आगामी समाज भी प्रभावित होता रहेगा।उन्होने अपने जीवन दर्शन के अनुरूप संघर्षमय क्रान्तिकारी जीवन व्यतीत किया था।वे सच्चे अर्थों में मानव कल्याण और जन जागरण संग्राम के एक महान् नायक थे,जिन्होने अवांछित और दमनात्मक स्थितियों का एक सच्चे संत के रूप में सामना किया।और अपनी अमृतवाणी के द्वारा जनसामान्य को सत् मार्ग में प्रतिष्ठित करने के साथ–साथ सार्वभौम मानवत्व,विश्वबंधुत्व एवं मानव ऐक्य की भावना को एक ऐसी अनाविल दृष्टि प्रदान की जिससे सोई हुई लोक चेतना फिर से जाग उठी।

*बीज शब्द–*लोक चेतना,संत रैदास,क्रान्तिकारी.

प्रस्तावना –

प्राणवान एवं मानवोपासक कवियों में लोक चेतना का भाव प्रायः पनपता है।लोक चेतना का अर्थ है लोक या समाज में नई,नव्य,नूतन चेतना या प्राण फूँकना। सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक,राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्रों की चेतना समन्वित रूप ही लोक चेतना कहलाता हैं।इस लोक चेतना को समाज में प्रचारित और प्रसारित करके समाज का अभिन्न अंग बनाने का कार्य एक सच्चा कवि ही कर सकता है।संत रैदास हिंदी साहित्य की ऐसी विभूति है जिन्होने अपनी तुलिका के माध्यम से लोक चेतना को प्राणवान बनाया है।संत रैदास के काव्य में विविधता के अतिरिक्त ऐसी व्यापकता मिलती है जैसे अकूल जलधि में जल की शत्–शत् धाराये समा जाती है।ऐसे ही लोक चेतना के विविध रूप उनके काव्य में समाहित हो गए है।लोक चेतना का भाव उनके हृदय में स्थायित्व ग्रहण कर चुकी थी।

संत रैदास एक ऐसे युग द्रष्टा श्लाका पुरुष हैं,जिन्होने भारतीय संस्कृति में लोक चेतना के नन्दादीप के प्रकाश को अक्षुण्ण बनाया और स्वयं के विचारों की प्रकाशधारा से समाज को आलोकित किया।संत रविदास अपने युग के क्रान्तिकारी जीवन दर्शन के व्याख्याता,परम भागवन्त संत थे।जिन का हृदय दूसरे के दुःख को देखकर द्रवित हो जाता था।जिन का सारा जीवन तप और त्याग से परिपूर्ण देशोत्थान,धर्मरक्षा,समाज कल्याण एवं मानव समभाव के सिद्धान्त को व्यापक रूप से समाज का अनिवार्य प्रदेय बनाने में व्यतीत हुआ।उन्होने अपने जीवन दर्शन के अनुरूप संघर्षमय क्रान्तिकारी जीवन व्यतीत किया था।वे सच्चे अर्थों में मानव कल्याण और जन जागरण संग्राम के एक महान् नायक थे,जिन्होने अवांछित और दमनात्मक स्थितियों का एक सच्चे संत के रूप में सामना किया।और अपनी अमृतवाणी के द्वारा जनसामान्य को सत् मार्ग में प्रतिष्ठित करने के साथ–साथ सार्वभौम मानवत्व,विश्वबंधुत्व एवं मानव ऐक्य की भावना को एक ऐसी अनाविल दृष्टि प्रदान की जिससे सोई हुई लोक चेतना फिर से जाग उठी और यही लोक चेतना आगे चलकर सर्वग्रासी अराजकता,धार्मिक असहिष्णुता तथा जनजीवन की अनिश्चितता की भयावह स्थिति का अंत करने में सहायक सिद्ध हुई।इसी कारण उनके समकालीन गुरु भाई संत कबीर ने रैदास को 'संतन में रविदास संत' कह कर इस तथ्य को स्पष्ट किया है–

"निरवैरी निहकांमता,साई सैती नेह
बिषियां सूं न्यारा रहे,संतन का अंग एह।"

संत रविदास का जन्म चमार जाति में हुआ।परन्तु प्रभु सिमरन करके उन्होने अपने आप को ऐसी गंगा में समन्वित का दिया जो प्रत्येक पापी का उद्धार करती है।संत रविदास की जाति चमार होने के कारण उन्हे सभी का विद्रोह का सामना करना पड़ा।परन्तु इन्हे जो ईश्वरीय ज्योति प्राप्त थी उस के माध्यम से इनके विचार सदैव विजयी होते गए।उन्होने इसका श्रेय प्रभु भक्ति को देते हुए लिखा है–

"नागर जना! मेरी जाति विखिआत चमार,
रिदै राम गोबिंद,गुन सार"

सामाजिक चेतना लोक चेतना का अभिन्न अंग है।यदि कवि समाज और अपने प्रति ईमानदार होगा तभी उसकी अभिव्यक्ति एकदम सत्य और प्रभावोत्पादक होगी । रविदास की सामाजिक चेतना उनके व्यक्तित्व की इस गरिमा को लिए हुए है।भारतीय ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था ने एक युग से अन्त्यजों को ऐसा पददलित किया था कि वे मानवीय धरातल पर खड़े होने की कल्पना भी नही कर सकते थे।संत रविदास जी इस व्यवस्था को अच्छी तरह परख व भोग चुके थे।रविदास के जीवन की सबसे बड़ी गरिमा यह थी कि उन्होने तथाकथित एक चमार जाति में जन्म लिया था और जीवन भर आन्तरिक नैतिक बल और स्वाभिमान से अपने चमारत्व को उद्घोषित किया है।उदात्त मानवीय संवेदनाओं से अनुप्रमाणित होने के कारण उन्होने अपनी जाति की हीनता ग्रन्थि को उखाड़ फैकने के लिये जिस शक्ति,सौन्दर्य और अदम्य साहस का परिचय दिया वह अभिनन्दनीय है।सारे समाज से उपेक्षित होकर भी वे उपेक्षित न रहे।इसका मूल कारण यह था कि उनके पास विश्वास और आस्था का बल था।रविदास बारम्बार अपनी जाति की घोषणा करके अपने युग के धर्म के ठेकेदारों को यह समझा दिया कि मात्र जन्म से ही कोई व्यक्ति उच्च या नीच नही हो सकता।उनका स्वर सत्य की अनुभूति पर आधारित होने के कारण ब्राह्मणों के अन्तर्मन में घर कर गया था और उनकी विरोध करने की शक्ति समाप्त प्रायः थी,इसलिए जन समाज के साथ–साथ उन्हें भी रविदास की लोक चेतना प्रवण वाणी को विवश होकर सुनना पड़ा।रविदास जी अपने गुरु की निम्न पंक्ति को समाज में प्रासंगिक करने की ओर अग्रसर थे–

" जाति पाति न पूछै कोई
हरि को भजै सो हरि कर होई।"

रविदास जी ने न तो किसी को अपना विरोधी समझा और न किसी को वैरी।ऐसे करोड़ों लोगों से उनका जीवन भर पाला पड़ता रहा है जिनका जीवन असंतों का था और जो समाज को बुराई से सराबोर करने में व्यस्त थे।उनके साथ लोगों ने बुरा से बुरा व्यवहार किया परन्तु उन्होने कभी भी अपने सहज स्वभाव को कभी नही छोड़ा।जिस तरह चंदन के वृक्ष के साथ अनेकों जहरीले सर्प लिपटे रहने पर भी चंदन का वृक्ष कभी अपनी सुगन्धि और शीतलता नही छोड़ता।उसी प्रकार रविदास जी ने भी कभी अपनी विनम्रता को नही त्यागा और न अपनी मिठभाषी संतई वाणी को।वह मानव व मानव समाज को मिठभाषी बनाना चाहते थे।क्योंकि समाज की हर समस्या का समाधान मीठी भाषा से ही है।इसीलिए संत रविदास लिखते है–

"संत न छाड़े संतई,कोटिक मिलै असंत।
चंदन भुजुंगा बैठिया तउ शीतलता न तजत।।"

रविदास की लोक चेतना दूसरे संतों सं सवर्था भिन्न थीं।क्योंकि उनके समक्ष केवल आत्मोद्धार और मोक्ष प्राप्ति का ही मार्ग नही था।यदि ऐसा होता तो वे अपना सारा जीवन किसी एकांत गुफा में बैठ कर प्रभु की उपासना और साधना में व्यतीत कर देते।युग दशा को देखकर उनका कोमल हृदय करुणा विगलित हो उठा।उन्होने अपना समस्त जीवन आत्म साधना करते हुए 'सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय' के लिये अर्पित कर दिया था।वे अपने भक्तिमय सशक्त व्यक्तित्व द्वारा निम्न वर्ग का ही नही,अपितु देश में फैली बुराइयों को मिटाकर समस्त वर्गों का उद्धार करना चाहते थे।उन्हे निर्भय बनाकर स्वच्छ,सुखी तथा स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने में समर्थ देखना एवं बनाना चाहते थे।परम्परा से चली आ रही कुरीतियों एवं बुराईयों से समाज को छुटकारा दिलाना उनका परम लक्ष्य था।स्वतंत्रता तथा मानवता का हनन करने वाले परम्परागत सामाजिक बंधनों को छिन्न–भिन्न करके ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिस में सभी आडम्बरों और जन्मजात भेदभाव का नाम भी न हो।मानव–मानव में भेद न रहे,लौकिक एवं पारलौकिक साधना में भी कोई भेदभाव बरता न जाय।उनकी एकमात्र यह अभिलाषा थी और ऐसा ही प्रयास रहा कि समाज को ईश्वरीय प्रेम का पाठ पढ़ा कर मनुष्यता के सच्चे पथ पर अग्रसर कर बेगमपुरा की स्थापना कर सके।तभी इस धरा पर शान्ति,समृद्धि,ज्ञान और वैराग्य से पूर्ण सच्चे रामराज्य की स्थापना हो सके।रविदास जी के परपौत्र कर्मदास जी ने रविदास की परिचई में रविदास की अनुशंसा करते हुए लिखा है–

"रविदास राम कौ अंसु प्यारा,
ज़गत उद्धारुनहित तन धारा।"

रविदास जी ने अपने जीवन में जो कुछ भी प्राप्त किया और जो भी ज्ञान–उपदेश समाज को सुख एवं कल्याण के लिए दिया।वह सब कुछ उन्हे गुरु–कृपा ने ही दिया है।यही कारण है कि वह समाज कल्याण और उद्धार के लिए गुरु की महत्ता को समझ गए थे और सच्चे

आनंद की प्राप्ति के लिए गुरु की शरण में जाकर ज्ञान का अक्षर सीखने पर बल देते हुए लिखा है–

"चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊ,
गुर की सांटि ग्यान का अच्छर,
बिसरै तो सहज समाधि लगाऊ।"

संत रविदास जी दूरदर्शी थे।सामजिक कल्याण के लिए वे लोगों कों भगवत् प्राप्ति के मार्ग की ओर अग्रसर करना चाहते थे।परन्तु वे समझ गए थे कि इस मार्ग में अनेक बाधायें है।अतः वे मानव समाज काम,क्रोध,लोभ,मोह,अंहकार,मद,मत्सर जैसे विकार का अन्त करना चाहते है।इसीलिए उन्होने नाम का आधार ,अहं का पूर्ण त्याग तथा अनन्य ईश्वर की शरणगति ही एकमात्र मार्ग हैं।रविदास कहते है–

"अब मोरी बूडी रे भाई,ताथै चढ़ी लोक बड़ाई।
अति अंहकार उर महं सतरज,ता में रह्यो उरझाई।।"

सामाजिक भेदभाव और छुआछूत से जन्म लेनी वाली मानसिकता समाज को पतन के पथ पर धकेल रही है।संत रविदास को यह ज्ञातव्य था कि इस युग में ईश्वर की शरणगति द्वारा ही समाज में सम्मान और आदर पाया जा सकता है।वे सदैव स्पष्टोल्लेख करते है कि जाति–पाति कुछ भी नही,सभी मनुष्य एक ईश्वर की संतान है यथा–

"जन्म जात मत पूछिए,का जात अरु पात,
रविदास 'पूत' सब प्रभु के,कोउ नंहि जात कुजात,
जातपात के फेर मंहि उरझि रहइ सब लोग,
मानवता कू खात हई रविदास जाति का रोग।"

रविदास जी का युग हिन्दु–मुस्लिम तनाव का युग था।उस काल के मुसलमान आक्रमणकारी भारत की भौगोलिक विजय और अपार संपत्ति लूटने के उद्देश्य तक स्वयं को सीमित न रखते हुए यहां के लोगो को मुसलमान बनाने की पूरी कोशिश में संलग्न थे।हिन्दु और मुसलमान दोनों एक दूसरे से घृणा करते थे।रविदास जी इस साम्प्रदायिक प्रवृत्ति का विरोध करते हुए हिन्दु–मुस्लिम एकता पर बल दिया है।उनकी दृष्टि में हिन्दु–मुस्लिम एक है,राम–रहीम भी भिन्न नहीं,काबा और काशी में उन्हें कोई अन्तर दिखाई नही देता।उनके विचारानुसार हिन्दु–मुस्लिम का संबंध कनक –कंगन जैसा है–

"मन्दिर मसजिद दोउ एक है,इन नह अन्तर नांहि।
रविदास राम रहमान कर झगड़ा कोउ नांहि।।
रविदास हमारों राम जोई सोई है रहमान।
काबा कासी जानीयहि दोउ एक समान।।"

रविदास ने अपनी लोक चेतना को प्राणवान सशक्त व प्रासंगिक बनाने के लिए धार्मिक चेतना का भी आलम्बन ग्रहण किया।क्योंकि धार्मिक चेतना ही सामाजिक मूल्यों का बहुतायत से निर्धारण एवं नियंत्रण करती है।इसलिए धार्मिक क्षेत्र में भी रविदास जी ने जो दोष देखे,उनके निवारण का सहज प्रयास किया है।मूलतः निर्गुण निराकार में विश्वासी रविदास साकार में विश्वास जतलाने वाले तथाकथित समाज के अधिकारी ब्राह्मणों की आडम्बर प्रियता को न सह सके ।रविदास जी ने कबीर की तरह तीखे प्रहार तो नही किए लेकिन जिन मर्मस्पर्शी मधुर व्यंग्यों का उन्होने आश्रय लिया वे संभवतः कबीर के आक्रामक प्रहारों से भी अधिक घातक सिद्ध हुए।आडम्बरपरायण पुजारियों की सारी पूजा व्यर्थ है क्योंकि वह चेतना से अभिमंडित नहीं।उनका कथन है कि

"दूधुत बछरै थनहु बिटारिओ।
फूलु भवरि जल मीनि बिगारिओं।।
माई गोबिन्द पूजा कहा लै चरावउ।
अवरु न फूलु अनूप न पावउ।।"

इससे स्पष्ट है कि रविदास धर्म के नाम पर बाह्याडम्बरों का बड़ी सर्तकता से विरोध करते है।समाज में आचरण का महत्व स्थापित करने के लिए धार्मिक नेताओं पर उनका प्रहार बड़ा सशक्त सिद्ध हुआ,संभवतः यही कारण था कि जब धर्माधीशों को रविदास की आचरणगत गरिमामय नैतिक शक्ति का बोध हुआ तब उन्होंने रविदास को प्रणाम किया था।तथाकथित नीचतम जाति में उद्भूत और उच्चतम संस्कारों से अभिमंडित रविदास ने धार्मिक क्षेत्र में नव्य चेतना प्रबल की।वह आगामी जन समाज को नैतिकता का सम्बल प्रदान करेगी।रविदास का दृष्टिकोण मानवतावादी था।उन्होने अपनी उदारता से समस्त मानव समाज को एकता के सूत्र में बांध दिया और सर्व भेदों को व्यर्थ बताकर सम्पूर्ण मानवों को एकता की माला में पिरोंने का स्तुत्य प्रयास किया।वे सदैव कहते है–

"एकै माटी के सभ भांडे,सब का एकै सिरजन हार।
रविदास व्यापै एकौ घट भीतर,सभकौ एकै घड़ै कुम्हार।।

ब्रह्मा को एक मानकर भी अनेक रूपों में उसकी उपासना की जाति है।परन्तु लोक चेतना में धार्मिक एकता का संदेश रूपायित करते हुए उन्होने ईश्वर के अनेकानेक रूपों को एक परमसत्ता कह कर संबोधित करते हुए कहा है–

"राधो किस्न करीम हरि,राम रहीम खुदाय।
रविदास मोरे मन बसहिं,कहुं खोजहूं बन जाय।।"

इस प्रकार रविदास जी ने धर्म और कर्मगत एकता का प्रतिपादन करते हुए उन्होने कहा है कि धर्म का अर्थ ही कर्म है,वह सत्कर्म,स्वकर्म,सदाचरण है–

"धरम करम दुइ एक है,समुझि लेहु मन मांहि,
धरम बिना जौ करम है,रविदास न सुख तिस मांहि।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि मध्ययुग के विख्यात चमार रविदास ने अपने कुल,जाति और जन्म पर जो स्वाभिमान प्रगटाया है वह अद्भुत है।आचरण और कर्म की गरिमा से केवल उन्होने लोक चेतना का उद्घोष ही नहीं किया,अपितु अपने महिमा मंडित जीवन से अनुप्रमाणित करके मध्ययुगीन चेतना को एक ऐसी नूतन दिशा दी,जिससे न केवल वह युग आलोकित हुआ,अपितु आगामी समाज भी प्रभावित होता रहेगा।रविदास भले ही उपेक्षित रहे परन्तु वे अपने स्वच्छ विचारों से मध्ययुग के सर्वाधिक मान्य व्यक्ति बन गए,जिनका जीवन वैयक्तिक आचरण की पवित्रता , सामाजिक लोक कल्याण की भावना,धार्मिक प्रेमपरायण भक्ति तथा आध्यात्मिक एकात्मिक साधना से परिपूर्ण था।उपर्युक्त गुणों से सम्पृक्ति उनकी लोक चेतना अपने युग व आने वाले युग का सदैव पथ प्रदर्शन करती रहेगी।इसीलिए यदि उन्हें मानवों में महामानव,भक्तों में परम भक्त,संतों में संत शिरोमणि,मुनियों में महामुनि, योगियों में महायोगी,समाज सुधारक महापुरुष कहेगे तो कोई अतियुक्ति न होगी।

संदर्भ ग्रन्थः–

1–युग प्रवर्तक संत गुरु रविदास,संपादक आचार्य पृथ्वी सिंह आजाद.
2–उत्तरी भारत की संत परम्परा,परशुराम ,भारतीय भण्डार इलाहबाद प्रकाशन.
3–संत रैदास ,योगीन्द्र सिंह,लोक भारती प्रकाशन.
4–रैदास वाणी,शुकदेव सिंह,राधाकृष्णन प्रकाशन,नई दिल्ली.
5– विश्व के महान संत,व्यथित हृदय,अनिता प्रकाशन,नई दिल्ली.
6–संत रविदास की निर्गुण भक्ति,मीरा गौतम,मोनु प्रकाशन,नई दिल्ली.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org